विनाशकाले विपरीत बुद्धिः

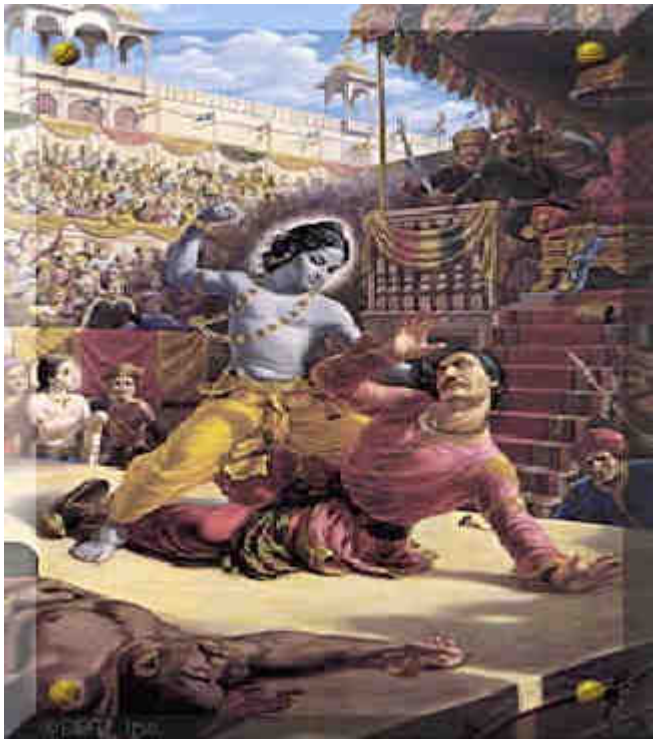

बुद्धिजीवियों जागो देखो ओखल में सबका है शीश।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

फैल रही भुखमरी जगत में अन्न नहीं खाने को है।
वसुन्धरा को जनसंख्या का दैत्य निगल जाने को है।।
अब कितने मानव के बच्चे देखो माँग रहे हैं भीख।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

द्वेष द्वन्द्व दुर्भाव परस्पर भूमण्डल पर फैल रहा।
भाई ही भाई के लोहू से होली अब खेल रहा।।
ऐक्यबोध खो गया घृणा की सबके दिल बैठी है टीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

यह धरती माटी–पानी का गोला नहीं रहा भाई।
कण–कण में बारूद भरी है प्रेत ले रहा अँगड़ाई।।
आज आणविक हथियारों का दानव दाँत रहा है पीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

निर्ममता से वृक्ष–वनस्पति, पशु–पक्षी का हनन हुआ।
प्रकृति संतुलन खो बैठी है इतना इसका दमन हुआ।।
अनावृष्टि भूकम्प बाढ़ ये प्रकृति–कोप भड़के छत्तीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

छल छन्दों की राजनीति ने कैसा नृत्य प्रचण्ड किया।
भाषा क्षेत्र जाति मजहब के कितने खण्ड–प्रखण्ड किया।।
लड़–लड़कर मर रहे परस्पर दुर्जन काढ़ रहे हैं खीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

रक्षा कवच विभंग हो चला धरती आज कराह उठी।
रोगों से परित्राण प्रदाता पुण्य पर्त ओजोन फटी।।
दुष्कर्मी मानव से धरती माँग रही जीवन की भीख।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

वायुप्रदूषण फैल चुका है दम घुटने की बारी है।
दूषित जल पीकर जीवन की सूख रही फुलवारी है।।
ध्वनि–दूषण कुविचार–प्रदूषण देख रहे छुपकर जगदीश।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

ऐड्स रोग का क्रूर शिकंजा कसता जाता है प्रतिदिन।
पीड़ित मानवता अब देखो काट रही है दिन गिन–गिन।।
महाकाल की क्रूर शिला यह मानव को डालेगी पीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

आज क्षितिज में विश्वयुद्ध का बादल फिर मँडराया है।
हथियारों की होड़ लगी है संकट फिर गहराया है।।
इस कुकृत्य पर मानवता का लज्जा से झुक जाए शीश।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

पर्यावरण प्रदूषित है अब तापमान बढ़ता जाता।
महासागरों का जलस्तर नित ऊपर चढ़ता जाता।।
बर्फ ध्रुवों की पिघल रही है महाप्रलय आयेगी मीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

आत्मघात की वृत्ति आज जन-जन के हृदय समायी है।
जब-जब ऐसी वृत्ति जगी है महामरण ले आयी है।।
धूमकेतुओं उल्काओं को धरती पर लेती यह खींच।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

जातिवाद का जहर अकेला अणुबम से भारी है यार।
एक ब्रह्म घट-घट में व्यापा किन्तु न उपजा मन में प्यार।।
मूढ़ पण्डितों पादरियों के फँसे लोग फंदों के बीच।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

दुष्कर्मों से अहंकार की सीढ़ी सब चढ़ लेते हैं।
निज पापों के फल को ईश्वर के माथे मढ़ देते हैं।।
पैर कुल्हाड़ी मार स्वयं कहते हैं सब करता है ईश।।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

रोम और यूनान मिश्र सैन्धव सभ्यता विलीन हुई।
मिटी सभ्यता जब-जब यह सत् प्रेम न्याय से हीन हुई।।
अंधी मानवता इतिहासों से जाने कब लेगी सीख।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

हर प्राणी में असुरक्षा का देखो भाव समाया है।
इस चिन्ता में मानव के मन में तनाव गहराया है।।
मादक द्रव्यों के आगे अब झुका रहे देखो सब शीश।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

अप्राकृतिक कृत्यों से देखो सबका स्वास्थ्य विनष्ट हुआ।
आत्मघात की ओर स्वतः बढ़ना सबका स्पष्ट हुआ।।
दवा-दारुओं के अपव्यय में दरिद्रता जाती है जीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

नारी चौतरफा अब देखो पीड़ित और प्रताड़ित है।
जिसने जनम दिया उसका ही शोषण सहज प्रमाणित है।।
माता कुंठित हुई कि धरती फट जाएगी सुन लो मीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

सत्य और सर्वत्व गँवाया प्रेम और एकत्व तजा।
न्याय समत्व छोड़कर सबने सत्ता का ही नाम भजा।।
असत् घृणा अन्याय पाप की होती है बोलो क्यों जीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

जाति रंग या लिंगभेद में गहन विषमता छायी है।
धर्म देश भाषा संस्कृति का पतन बहुत दुःखदायी है।।
दुर्जन तो रक्षित हैं लेकिन सज्जन को राखे जगदीश।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

देव और मानव संस्कृति का सुन्दर जीवन छोड़ चले।
दैत्य और दानव संस्कृति के पथ पर देखो दौड़ चले।।
अंधी दौड़ तजो हे भाई! चलो हाथ में लेकर दीप।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

द्वेष द्वन्द दुर्भाव विषमता फूट परस्पर दुर्व्यवहार।
दानव संस्कृति की प्रवृत्ति यह महामरण की है आधार।।
मूढ़ कुटिल कुंठित कुविचारी दनुजों की बढ़ आयी भीड़।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

सत्य सर्वता ज्ञान जगाओ प्रेम एकता अपनाओ।
समता न्याय बुद्धि में लाओ शुभता पुण्यकर्म ध्याओ।।
सत्य प्रेम नय पुण्य न भाया बोलो क्यों तुमको हे मीत!
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

आत्मचेतना नहीं जगायी नहीं जगाया दिल में प्रेम।
मन में न्याय न जागा कैसे होगे सकुशल कैसे क्षेम।।
पशुता दानवता यह सबको निश्चय ही डालेगी पीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

पवन परिस्थितियों का 'अंकुर' यदि बिल्कुल प्रतिकूल चले।
तन मन स्वस्थ रहें क्यों कैसे हृदय भाव का फूल खिले।।
प्रेम-विवेक विहीन चेतना क्या गाये जीवन के गीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

सत्य और सर्वार्थिकता है ब्रह्मपरायण की पहिचान।
प्रेम और परमार्थिकता है दिव्य देवताओं की शान।।
न्याय और समता मानव की द्वन्द-द्वेष दानव की रीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

बड़े-बड़े भूखण्ड पड़े हैं पर मानव भूखा लाचार।
घोर परिश्रम करते बच्चे बूढ़े स्त्री बेघरबार।।
भिक्षा वेश्यावृत्ति पेट के लिये अरे कैसी यह नीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

हे मानव! इस मानवता की कुछ तो लाज बचा लेते।
समविधान निर्मित कर अवसर सबको सुलभ करा देते।।
सबके लिये समान आय के स्रोत और अवसर हो मीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

'जिसकी लाठी भैंस उसी की' झूठे सब विधि और विधान।
जंगल का कानून चल रहा जग में है छल-छद्म प्रधान।।
बाहुबली डाकू बन बैठे मनोबली सब हुए खभीस।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

सतोबुद्धि सद्भाव जगाएँ समता और एकता हेतु।
हो मानव सभ्यता प्रतिष्ठित जिसमें बने न्याय का सेतु।।
धन पद लिंग जाति में समता का सब पर बरसे आशीष।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

जब सत्बुद्धि बढ़े तब जागे उर में प्रेम और सत्भाव।
तभी जगे बन्धुत्व परस्पर तब परिवार बनेगा गाँव।।
देववृत्ति एकात्मभाव है यही देवसंस्कृति है मीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

देवसंस्कृति प्रेमपूर्ण है जहाँ एक रहता सुर-ताल।
एक रंग में रँगे हुए सब कोई नहीं सेठ कंगाल।।
यह अद्वैत प्रेममय जीवन ब्रह्मसत्य का है आशीष।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

कहता है अद्वैतज्ञान यह व्याप्त चेतना सबमें एक।
देश धर्म भाषा संस्कृति के किए कहो क्यों खण्ड अनेक।।
आत्मज्ञान बिन लड़े परस्पर एक वृक्ष से उपजे बीज।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

हुआ आज सद्ज्ञान बिना ही देखो सबका हृदय कठोर।
जलधारा से बँटकर लड़ता एक छोर से दूजा छोर।।
अगर देखते भीतर दोनों द्वन्द न होता उनके बीच।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

एक-दूसरे को आपस में बाँट रही माया की रेख।
ज्ञानचक्षु जिसने भी खोला उसने लिया अखण्डित देख।।
एकमात्र अद्वैत ब्रह्म है कहते सन्त महन्त मुनीश।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

प्रेम न्याय की बात छोड़ जो घृणा और अन्याय करे।
कैसे उसको धर्म कहोगे जो विपरीत उपाय करे।।
'अंकुर' सत्य वही जो सबको देता प्रेम न्याय की सीख।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

चलो सँवारो तन को मन को और हृदय के आँगन को।
आत्मचेतना प्रखर बनाकर धन्य करो इस जीवन को।।
सत्य प्रेम के न्याय पुण्य के सत्पथ पर प्रभु का आशीष।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

दानव संस्कृति से ऊपर उठ मानव संस्कृति ग्रहण करो।
सत्य प्रेम द्वारा प्रतिपादित तुम समाज का वरण करो।।
न्यायशीलता जाग उठे तो निश्चित हृदय जगेगी प्रीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

देव और मानव संस्कृति का रूप पुनः स्वीकार करो।
प्रेम न्याय की सुखद सभ्यता का फिर से श्रृंगार करो।।
धरा स्वर्ग होगी ईश्वर का बरसेगा अमृत आशीष।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

यह विनाश विध्वंश रुकेगा जग में हरियाली होगी।
रोग-शोक दुःख-द्वन्द मिटेगा जग में खुशहाली होगी।।
प्रेम न्याय से ही धरती पर गूँजेगा फिर से संगीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।

वसुधा तभी कुटुम्ब बनेगी प्रेम न्याय जब आएगा।
विश्व-बन्धुता भाईचारा अपना रूप दिखाएगा।।
किन्तु न्याय के बिना प्रेम का रंग नहीं चढ़ता है मीत।
महानाश का बिगुल बज रहा एक नहीं कारण हैं बीस।।